International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 6, Issue 12, December 2019
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

अमृतलाल नागर का 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' और राजगोपाल सिंह वर्मा का 'बेगम समरू का सच' उपन्यासों : कालखंड और घटनाक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय,
बी०बी० नगर, बुलन्दशहर

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र हमारे सामने कई महत्वपूर्ण सच्चाइयों को प्रकट करता है। यह अमृतलाल नागर और राजगोपाल सिंह वर्मा के उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन तो करता ही है; उसके साथ ही किसी घटना को वर्णित करने और चरित्र को औपन्यायिक रूप से विश्लेषण करने में जो एक दृष्टि और रचनात्मक काम करती है उसका सघन विश्लेषण है। 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' और 'बेगम समरू का सच' शोध विषय उस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण विषय है। राजगोपाल सिंह वर्मा के उपन्यास को लेकर हिंदी के कई महत्वपूर्ण विद्वानों ने इसकी औपन्यासिक कला पर विमर्श किया। यह शोध पत्र इन दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन तो करता ही है उसके साथ ही अपनी प्रस्थापनाओं को भी स्थापित करता है।

बीज शब्दः लेखकीय दृष्टि, ऐतिहासिक चरित्र, ऐतिहासिक कालखंड, ऐतिहासिक तथ्य, चरित्र प्रधान, उपन्यास, जीवनी परक उपन्यास।

दो रचनाकार अमृतलाल नागर और राजगोपाल सिंह वर्मा की इतिहास को साहित्य में ढ़ालने और चरित्र–चित्रण के माध्यम से उस कालखंड को यह शोध पत्र समझेगा। यह दोनों ही उपन्यास बेगम समरू को देखने की विभिन्न दृष्टियों को समझने का भी माध्यम उपलब्ध करवाता है। शोध–पत्र बेगम समरू के व्यक्तित्व को विस्तार से समझने का प्रयास करता है। शोध–पत्र का आधार दो टेक्स्ट अमृतलाल नागर का 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' और राजगोपाल सिंह वर्मा का 'बेगम समरू का सच' उपन्यास होगा। दोनों उपन्यासकार एक व्यक्ति को भिन्न–भिन्न दृष्टियों से देख रहे हैं। राजगोपाल सिंह वर्मा आधुनिकता और तार्किकता इतिहास सापेक्ष और नागर कल्पना का पुट लेकर अपना लेखन कर रहे हैं। यह कथ्य को निज तरीके से अभिव्यक्त करने की प्रविधि है।

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' उपन्यास 18वीं सदी की प्रसिद्ध ऐतिहासिक चरित्र सरधना रियासत की मल्लिका बेगम समरू पर केन्द्रित है। 18वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और 19वीं शताब्दी का प्रारंभ का उत्तर–भारत का इतिहास बेगम समरू के बिना अधूरा है। बेगम समरू के चरित्र को आधार बनाकर अमृतलाल नागर ने 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के ऐतिहासिक कालखंड को बेगम समरू के चरित्र को केन्द्र में रखकर इस उपन्यास का ताना–बाना बुना है। अमृतलाल नागर द्वारा लिखित इस ऐतिहासिक चरित्र प्रधान उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, पात्रों एवं विश्लेषण को लेकर इतिहासकारों और साहित्यकारों एवं आलोचकों में बहुत मतभेद है। ऐतिहासिक तथ्यों और पात्रों की प्रामाणिकता इसके विवाद की मूल वजह है।

अमृतलाल नागर के उपन्यास 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' के प्रकाशन के सात दशक के बाद राजगोपाल सिंह वर्मा इसी कालखंड और इसी पात्र के आधार बनाकर अपना जीवनीपरक उपन्यास 'बेगम समरू का सच' लिखते हैं। 'बेगम समरू का सच' अपने आकार में 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' की अपेक्षा वृहदाकार का है। इस उपन्याम में बेगम समरू के जीवन और चरित्र से जुड़े नवीन तथ्य और

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मान्यताएं प्रकाश में आती हैं। अमृतलाल नागर द्वारा बेगम के चरित्र के विषय में दी गई स्थापनाओं, विश्लेषण एवं तथ्यों को राजगोपाल सिंह वर्मा चुनौती देते हैं, जिसके कारण दोनों उपन्यासों के मध्य एक डिबेट (वाद–विवाद) शुरू हो जाते हैं। दोनों उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं एवं चरित्र संबंधी साम्यताएं एवं विषमताएं देखने को मिलती हैं। इस शोध कार्य में अमृतलाल द्वारा लिखित 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' और राजगोपाल सिंह वर्मा का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया है।

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' उपन्यास में हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल द्वारा लिखित एक लघु कलेवर का उपन्यास है। यह उपन्यास मूलतः सरधना रियासत की मलिका बेगम समरू पर आधारित है। अमृतलाल नागर हिंदी उपन्यास के इतिहास में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के लिए नहीं जाने जाते हैं किंतु फिर भी उन्होंने इतिहास को एक महत्वपूर्ण कालखंड और सरधना रियासत की मालकिन बेगम समरू को आधार बनाकर इस उपन्यास की सृष्टि की है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1968 ई० में हुआ। इसके घटना के 51 वर्ष बाद राजगोपाल सिंह वर्मा ने इसी कालखंड और सरधना बेगम समरू को आधार बनाकर एक जीवनीपरक उपन्यास लिखा। दोनों उपन्यास एक ही कालखंड और एक ही ऐतिहासिक चरित्र को केन्द्र में रखने के बावजूद कई प्रकार की साम्यता और वैषम्यता रखते हैं। इन दोनों उपन्यासों की तुलना यूं तो कई बिंदु को आधार बनाकर की जा सकती है किंतु इस शोध कार्य की अपनी सीमायें होने के कारण हम ऐतिहासिकता को केन्द्र में रखकर इन दोनों उपन्यासों की विभिन्न बिंदुओं के अन्तर्गत तुलना करने का प्रयास करेंगे।

इन दोनों उपन्यासों की तुलना करने से पूर्व हमें दोनों उपन्यासों की संक्षिप्त रूप में कथाकार को जानना भी अपरिहार्य है। जन्म परिचय अमृतलाल नागर की रूचि बचपन से ही लेखन में रही है उन्होंने पहला कहानी संग्रह 'वाटिका' 1935 में प्रकाशित किया। उन्होंने एक स्वतंत्र लेखक और पत्रकार के रूप में कार्य–जीवन का आरंभ किया। कोल्हापुर से प्रकाशित होने वाले पत्र 'चकल्लस' का संपादन किया। फिर लगातार हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास, कहानी, नाटक, बाल साहित्य, फिल्म, पटकथा, लेख, संस्मरण इत्यादि में सर्जना की लेकिन उनकी विशेष ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में है। अमृतलाल नागर हिन्दी उपन्यास की परंपरा में उन्हें प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ 'रेणु', नागार्जुन, यशपाल की श्रेणी में रखा जाता है।

अमृतलाल नागर का जन्म 1 अगस्त 1916 को उत्तर–प्रदेश के गोकुलपुरा में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ। 1 फरवरी 1990 को स्वर्गवासी हो गए।

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' एवं 'बेगम समरू का सच' उपन्यास एक संक्षिप्त परिचय–

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' अमृतलाल नागर का यह उपन्यास अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर का कालखंड है। इस कालखंड में औरतों या महिलाओं को खरीदा या बेचा जाता था। यह उपन्यास भी इसी घटना से शुरू होता है। बशीर खाँ मुन्नी उर्फ फरजाना को जनरल रेन्हार्ट को दस हजार अशर्फियों में बेच देता है। तभी से मुन्नी अपने मन में एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ बनने की ठान लेती है। तभी से शुरू होता है मुन्नी उर्फ फरजाना से बेगम समरू बनने की कहानी। एक उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करता है–

> *''नौकरों–चाकरों को भी यह मालूम हो गया कि उसके मालिक के हरम में यह औरत खिलौना बनकर नहीं आई, बल्कि शासन करने आई।''*[1]

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' उपन्यास के केन्द्र में बेगम समरू है जिन्हें मुन्नी, दिलाराम और जुआना के नाम से भी संबोधित किया गया है।

बेगम समरू के अतिरिक्त बशीर खाँ जो उसे बेच देता है। जनरल वॉल्टर रेन्हार्ट (नवाब समरू) है, जिससे बेगम का प्रेम और शादी होती है, जिससे फरजाना, दिलाराम से जुआना हो जाता है और जुआना से बेगम समरू नाम प्रसिद्ध हो जाता है।

टॉमस रेन्हार्ट का सेनापति है जिससे बीच में कुछ समय तक थोड़ा–थोड़ा प्रेम प्रसंग अंधरूनी चलता रहता है, जिससे रेन्हार्ट और टॉमस के बीच तनाव उत्पन्न हो जाता है। बाद में आकर लवसूल में भी प्रेम–प्रसंग चलता है, जिससे बेगम छुपकर शादी भी करती है और उसके साथ भाग निकलती है, जिससे अंत में लवसूल की मृत्यु हो जाती है। बेगम समरू बच जाती है। उनके सिपाही बेगम को महल के अंदर ले आते हैं। अंत में बेगम समरू की दीन–दुनिया बदल चुकी होती है।

राजगोपाल सिंह वर्मा का जन्म 14 मई, 1957 को मुजफ्फरनगर, उत्तर–प्रदेश में हुआ। राजगोपाल सिंह वर्मा हिंदी साहित्य के समकालीन कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में विविध विधाओं में सशक्त लेखन किया है किंतु उनकी ख्याति एक उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में हुई है। उनके साहित्य की मूल चेतना ऐतिहासिक बोध है।

'बेगम समरू का सच' का परिचय–

'बेगम समरू का सच' राजगोपाल सिंह वर्मा द्वारा रचित, एक जीवनीपरक उपन्यास है, जो कि एक सोलह साल की एक खूबसूरत सरधना रियासत पर 58 साल तक राज करने वाली मशहूर फरजाना उर्फ बेगम समरू के जीवन चरित्र पर आधारित है।

फरजाना उर्फ बेगम समरू मेरठ के शहर के कोताना गाँव में जन्मी थी। इनके पिता लुत्फ अली खाँ ने दो शादियाँ की थी। फरजाना सन् 1751 ई० में जन्मी दूसरी कश्मीरी बीबी जद्दन से जन्मी औलाद थी।

फरजाना जब छह साल की थी तो इनके पिता लुत्फ अली खाँ चल बसे थे। पति के मरने के बाद उनके सौतेले बेटे ने माँ–बेटी के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू किया, जिससे माँ–बेटी ने उपयुक्त शरण की खोज में घर से निकलकर 1760 ई० में दिल्ली पहुँची। उस समय चावड़ी बाजार की रौनक कोठों से थी और माँ जद्दन के पास उसे कोठे पर सौंपने के अलावा जिंदा रहने का कोई चारा न था। तो बेगम समरू दिल्ली के कोठे पर नाच–गाना कर अमीरजादों का दिल बहलाने का साधन थी। एक दिन जर्मन फौजी कोठे पर आता है। वह फरजाना का नृत्य कलाएँ देखकर उसमें मोहित हो जाता है, फरजाना भी उन पर मोहित हो जाती है। जर्मन फौजी एक दिन सरधना की जागीर का शासक बन जाता है लेकिन जर्मन फौजी रेन्हार्ट सोंब्रे और फरजाना उर्फ बेगम समरू का प्रेम अधिक नहीं चल पाता। रेन्हार्ट सोंब्रे हमेशा के लिए बेगम समरू का साथ छोड़ जाते हैं। उसके बाद के किस्से कुछ षड्यन्त्रों, एक पर्दानशीं महिलाक की दिलेरी, युद्धों, बेगम की कूटनीतियों और राजनीतिक कुशलता के सफर स्मृतियों को बखूबी उकेरा गया है।

हिंदी कथा साहित्य के उद्भव काल से ही ऐतिहासिक उपन्यासों एवं कहानियों की एक समृद्ध पंरपरा रही है। तिलिस्मी, जासूसी, ऐय्यारी इत्यादि घटनाओं को ऐतिहासिक साँचे में ढाला जाता रहा है।

देवकीनंदन खत्री से लेकर गोपालराम गहमरी, बालकृष्ण भट्ट से आरंभ होकर यह परंपरा जयशंकर प्रसाद, वृंदालाल वर्मा, रांगेय राघव और कुछ अर्थों में हजारी प्रसार द्विवेदी तक आती है।

राजगोपाल सिंह वर्मा भी इसी परंपरा की एक मजबूत कड़ी के रूप में उभरे है।

अमृतलाल नागर द्वारा लिखित 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' और राजगोपाल सिंह वर्मा द्वारा सर्जित उपन्यासों का आधार सरधना की मशहूर बेगम समरू के जीवन पर आधारित है। दोनों उपन्यासों की कथा एक ही कालखण्ड़ों का केन्द्र बिंदु बनाती है। किंतु फिर भी दोनों उपन्यासों में पर्याप्त अन्तर है। अमृतलाल नागर का ध्यान ऐतिहासिक कालखंड और घटनाओं की प्रामाणिकता और सूचिता की अपेक्षा बेगम समरू के चरित्र की बारिकीयों को दिखाने पर अधिक रहा है। बेगम समरू के चरित्र को उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में कम अपितु किंवदंतियों एवं जनश्रुतियों के आधार पर विकसित किया है। उपन्यास के प्रारंभ में ही अमृतलाल नागर इस बात की पुष्टि कर ऐतिहासिकता से अपना पल्ला झाड़ लेते हैं।

> *''यह इतिहास नहीं, ऐतिहासिक चरित्र–प्रधान उपन्यास है। तिथियों और घटनाओं के क्रम–परिवर्तन मनोवैज्ञानिक स्थितियों के अनुसार इसमें कर लिये गए हैं, क्योंकि बेगम समरू का इतिहास प्रामाणिक होते हुए भी उसकी बहुचर्चा के कारण किंवदंतियों से भरा हुआ है।''*[2]

राजगोपाल वर्मा ने उपन्याम की भूमिका में ही इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि उनके लिए ऐतिहासिक तथ्य और सत्य सर्वोपरि है। वे किसी भी ऐतिहासिक चरित्र को कपोल कल्पनाओं के आधार पर भ्रमित किये जाने के मुखर विरोधी है। उनके लिए ऐतिहासिक तथ्य श्लाघ्य है। वे किंवदंतियों और सुनी सुनाई बातों के आधार पर किसी भी ऐतिहासिक घटना को विकृत किये जाने को लेकर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। उन्होंने इस संबंध में स्वयं भूमिका में लिखा भी है–

''जो लोग आधुनिक भारत के इतिहास में रुचि रखते हैं, उन्हें बेगम समरू के विषय में विस्तार से बताने की ज़रूरत इसलिए है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर तमाम भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि फरज़ाना उर्फ बेगम समरू के प्रति तमाम लेखकों, विशेषकर उपन्यासकारों और नाटककारों ने न्याय नहीं किया। इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते अपनी इस रचना को मैं उपन्यास विधा से कम और विशुद्ध ऐतिहासिक लेखन के काफी निकट मानता हूँ। तथ्य और घटनाएं मेरे लिए अक्षुण्ण हैं। यह लेखन उन्हीं शुद्ध तथ्यों पर आधारित है। बेगम की अच्छाई और बुराई का कोई निर्णय इस प्रकाशन से नहीं होने जा रहा, पर जो इंसान पांच दशक से भी अधिक समय तक देश के एक महत्त्वपूर्ण भू–भाग के ऐतिहासिक फलक पर छाया रहा, एक लेखक के रूप में बिना किसी पूर्वाग्रह के उचित परिप्रेक्ष्य में उसका आंकलन करना और उस आकलन को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना ही एक लेखक का धर्म है। पाठक उपलब्ध तत्कालीन तथ्यों, घटनाक्रम और परिस्थितियों को समझकर स्वयं बेहतर विश्लेषण करने की क्षमता रखते हैं।''[3]

लेखक की टिप्पणी से स्पष्ट विदित होता है कि लेखक किसी भी घटना और तथ्य को सुविधानुसार घटाने या बढ़ाने का पक्षपाती नहीं है। लेखक ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि बेगम समरू का इतिहास बहुत प्राचीन इतिहास नहीं है वरन् वह 250 साल पूर्व का ही कालखंड है। जिसे हम थोड़ा–सा धैर्य और परिश्रम के पश्चात् उचित परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं।

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास में घटनाक्रम और तिथियों को अपनी सुविधानुसार तोड़ा–मरोड़ा है। इसलिए 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाक्रम इतिहास के साथ मेल नहीं खाता। अमृतलाल नागर ने अपने उपन्याम के प्रारंभ में ही बेगम समरू को मुन्नी उर्फ दिलाराम के सौदा करने की घटना को उपन्यास में वर्णित किया है।

अमृतलाल नागर ने उपन्यास में दिखाया है कि बशीर खाँ नाम का एक युवक जिसे उसके पिता शकूर खाँ मुन्नी उर्फ दिल्लाराम को कहीं से खरीदकर लाये थे। बशीर खाँ के पिता शकूर खाँ जो लड़कियों और औरतों को खरीदता और बेचता है। शकूर खाँ के मरने पर उसका बेटा बशीर खाँ 10 हजार असर्फियों के बदले फ्रेंच सेनापति वॉल्टर रेन्हार्ट को बेच देता है।

''दिलाराम के दिल का सोना असलियत की भट्टी में तप–तपकर पिघल और ढल रहा था। कल शाम जब उसकी बाँदी और सहेली महबूबा ने उसे बतलाया कि बशीर खाँ ने दस हज़ार सोने की अशर्फियों पर उसका सौदा पक्का कर लिया है तो उसकी भोली–भाली मन की दुनिया में एकाएक प्रलय–सी आ गई थी। उसका सपनों का संसार पानी के बुलबुलों की तरह एकाएक गायब हो चुका था। कल शाम से लेकर अब तक वह एक पल नहीं सोई है। बशीर खाँ से मिलने के लिए रात–भर बावली हवा के झोंकों–सी इधर–उधर घर भर में डोलती रही है। . . .

कहाँ तो वह सोचती थी कि शकूर खाँ के मरते ही वह बशीर खाँ की बीवी बन जाएगी। समझती थी कि शकूर खाँ का लालच ही बशीर खाँ की बेबसी है . . . मगर बशीर अपने बाप से भी बड़ा लालची निकला। उफ्! पिछले पाँच बरसों में इसने कितना ढोंग किया मुझसे! मैं हर पल इससे ठगी गई। मेरा हर सच झूठ निकला।''[4]

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि बेगम समरू को बशीर खाँ युवक के हाथों फ्रेंच कर्नल सेनापति वॉल्टर रेन्हार्ट को बेचा गया था किंतु यह तथ्य ऐतिहासिकता के साथ मेल नहीं खाता। तमाम शोध जो बेगम समरू पर केंद्रित है वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि बेगम समरू और फ्रेंच सेनापति वॉल्टर रेन्हार्ट की मुलाकात चावड़ी बाजार के एक प्रसिद्ध कोठे पर हुई थी। जहाँ फरजाना (बचपन का नाम) और उसकी माँ अपने पिता के दिवगंत होने पर और अपने सौतेले भाई के दुर्व्यवहार के कारण

घर से निकाले जाने पर अपने आश्रय के लिए ठिकाना ढूँढ़ने और फिर ठिकाना न मिलने पर भूख और बेबसी और दर–दर की ठोकरे खाने के पश्चात् चावड़ी बाजार में स्थित एक कोठे पर आश्रय पाती है। यह कोठा कोई वेश्यावृत्ति का अड्डा नहीं था अपितु नृत्य और संगीत के कद्रदानों के लिए एक मनोरम स्थल था। इसी कोठे पर फरजाना को विधिवत रूप से संगीत और नृत्य की शिक्षा दी गई। फरजाना को बहुत कम उम्र में ही उर्दू और फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान हो चला था। इसी कोठे पर नृत्य देखने आये वॉल्टर रेन्हार्ट की मुलाकात समल के साथ हुई और फिर धीरे–धीरे यह मुलाकात का सिलसिला प्रेम में रूपान्तरित हो गया। फरजाना बचपन से ही अनिंद्य सुंदरी थी।

रेन्हार्ट सोंब्रें फरजाना को पहली नजर में देखते ही उस पर आशक्त हो गये थे। षोड्सी फरजाना की नफासत, नजाकत, नृत्य और गायन ने रेन्हार्ट को फरजाना का दीवाना बना दिया था।

राजगोपाल सिंह वर्मा ने इस समूचे घटनाक्रम का बहुत ही शालीनता और मर्यादा के साथ वर्णन किया है। फरजाना और रेन्हार्ट के मध्य उम्र एक अंतराल होने के बाद भी लेखक ने उसे खरीद–फरोख्त के रूप नहीं अपितु प्रेम के सहज और नैसर्गिक रूप में चित्रित किया है।

राजगोपाल सिंह वर्मा ने बेगम समरू के रूप, रंग, कद, हाव–भाव और ललित कलाओं के प्रति उसके रूझान में कल्पना का सहारा तो लिया है किंतु कहीं भी ऐतिहासिक घटनाक्रम और तथ्यों की अवहेलना नहीं की। तमाम ऐतिहासिक साक्ष्य और बेगम समरू पर लिखित साहित्य इस बात की तस्दीक करते हैं कि बेगम बेपनाह सुंदर थी साथ ही उसका कद औसत से कुछ कम था। रेन्हार्ट पहली नजर से ही बेगम समरू पर अपना दिल घर बैठे थे। रेन्हार्ट फरजाना से विधि–विधान और सम्मान के साथ फरजाना को विवाह का प्रस्ताव देते हैं। लेखक ने इस तथ्य को भी छिपाया नहीं है। कोठे पर होने के कारण रेन्हार्ट कोठे की मालकिन को फरजाना से शादी करने के बदले हरजाने के रूप में कुछ रूपये अवश्य देते हैं। किंतु वह कोई खरीद फरोख्त न होकर फरजाना और रेन्हार्ट की प्रेम प्रणीति का एक उत्कृष्ट रुप था–

> *''हुजूर ने ग़ौर किया कि वह सुंदरी अनिंद्य थी, उसकी हिरनी जैसी आंखें, एक मीन आमंत्रण–सा लिए होठ, सुर्ख गाल और कलात्मक अंगुलियां . . . उस पर छरहरा बदन . . .!*
>
> *दिल में उतरने का इससे सरल रास्ता कोई और नहीं था. सीधे किसी देवी का वास था उसके खूबसूरत व्यक्तित्व में . . . ।''*[5]

अमृत लाल नागर की रूचि फरजाना और रेन्हार्ट के बीच प्रेम के सरल और सहज स्फुरण और उदात्त रूप में नहीं है। नागर ने मुन्नी उर्फ दिलाराम को युवा अवस्था से ही एक अतिमहत्वकांक्षीणी और चालाक स्त्री के रूप में चित्रित किया है। एक उद्धरण इस सन्दर्भ में देखने योग्य है–

> *''एकान्त होने पर समरू के चित्र, खासतौर से उसकी नीली आँखों को गौर से देखते हुए दिलाराम ने कहा, नीली झील में माँद बनाकर रहने वाले इस विलायती भेड़िये को आखिर किस तरह से मैं अपने वश में करूँगी महबूबा? यह तो बशीर खाँ और उसके अब्बा मरहूम से भी कहीं ज्यादा बेदिल और खूँखार नजर आ रहा है।''*[6]

अमृतलाल नागर ने बेगम समरू को बेगम समरू और रेन्हार्ट के मध्य संबंधों को प्रेम, विश्वास, स्नेह की अपेक्षा, धूर्तता, चालाकी, धोखेबाजी के रूप में चित्रित किया है। अमृतलाल नागर की रूचि तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियों के विश्लेषण करने की अपेक्षा बेगम समरू के चरित्र हनन में अधिक दिखायी है। नागर ने समरू के सेनापति टॉमस और बेगम के बीच अवैध प्रेम संबंधों को विस्तार दिया है। उन्होंने उपन्यास में चित्रित किया है कि बेगम समरू रेन्हार्ट के सेनापति टॉमस के साथ प्रेम के गुल खिलाती है और अपने पति समरू को शक्तिहीन और जर्जर कर सारी सत्ता और शक्ति अपने अधीन करना चाहती है। बेगम समरू और रेन्हार्ट के मध्य अविश्वास, संदेह और एक–दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु प्रवृत्ति को चित्रित किया गया है। एक उद्धरण दृष्टव्य है–

> *''जुआना जानती थी कि समरू जान–बूझकर अपने बेटे को आगे बढ़ाना चाहता है ताकि उसकी आँखें मिचते ही उसकी कमाई हुई दौलत तीन–तेरह न हो जाए। वह खूब जानती थी कि उसके हुस्नो–हुनर का गुलाम*

होने के बावजूद समरू उसे दिल से नहीं चाहता और इसीलिए वह यह भी नहीं चाहता कि जुआना और टॉमस की ताकत बढ़े। समरू सिर्फ इसी वजह से उसकी हर उम्दा चाल में एक पख निकालकर उसे अपने काबू में रखना चाहता है। बेहद चालाक होने के बावजूद दीदा–औ–दानिस्ता वह चूक करता चला जाता है। समरू थक गया है, बूढ़ा हो गया है। वह खुद नहीं जानता कि वह चाहता क्या है? लेकिन जुआना अपने बूढ़े शौहर को अपनी उँगलियों पर नचाना जानती है।''[7]

यह तथ्य भी ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहीं खाता क्योंकि तमाम ऐतिहासिक साक्ष्य इस बात की गवाही देते हैं कि बेगम समरू अपने पति रेन्हार्ट से जीते जी बहुत प्रेम करती थी उसके जीवित रहते बेगम के जीवन में कोई दूसरा व्यक्ति प्रवेश नहीं कर पाया था। बेगम समरू अपने पति के प्रति उसके जीते जी और मरने के बाद भी प्रेम और कृतज्ञता से भरी रही। बेगम समरू के जीवन में रेन्हार्ट की मृत्यु के बाद अपने ही सेनापति ली–वासे आता है और उसके साथ गोपनीय रूप से विवाह भी रचाती है, जिसकी परिणति अपनी रियासत की सेना के विद्रोह के रूप में सामने आती है, जिसके कारण उसे सत्ता से निष्कासित भी होना पड़ता है और नौ माह जेल में व्यतीत करने पड़ते है। विद्रोही सेना उसके सौतेले बेटे जफरयाब को राजा बनाकर बेगम को जेल में डाल दिया जाता है, जिसे बाद में उसके ही निष्कासित सेनापति जॉर्ज थॉमस के द्वारा कैद से निकाला जाता है और पुनः सत्तासीन कराया जाता है।

अमृतलाल नागर ने रेन्हार्ट की मृत्यु उसके सेनापति टॉमस के हाथों विवाद में दिखायी है जबकि यह घटना ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मेल नहीं खाती। जबकि ऐतिहासिक तथ्य यह है कि रेन्हार्ट की मृत्यु बीमारी के कारण आगरे के जिले में हुई थी और बेगम ने रेन्हार्ट को बचाने के बरकस प्रयास किये थे। राजगोपाल वर्मा ने जीवनीपरक उपन्यास में इस तथ्य को बहुत विस्तार से दिखाया है।

आज चौथा दिन था, रह–रह कर सांब्रे तेज़ बुखार से पीड़ित था। हक़ीम सरफराज हुसैन सवेरे–शाम अकबराबाद के महल में आ रहे थे, लेकिन ज़ाहिर तौर पर उनकी दवाओं का कोई खास असर होता नहीं दिख रहा था। तीव्र बुखार, फेफड़े में संक्रमण, श्वसन में असहजता, छोटी और तेज़ सांसें, ऊपर–नीचे होती नाड़ी और खांसी के दौरे– यह लक्षण चिंता करने वाले थे।

बेगम ने अपने समरू साहब की आंखों में झांका। उन्होंने आंखों से ही इशारा करके उन्हें नज़दीक बैठे रहने को कहा।

बेगम ने समरू का हाथ थाम लिया। दूसरे हाथ से वह उनके नज़दीक बैठ कर माथा और सर सहलाती रही। समरू मुस्कुराने का प्रयास भर करते रहे। पर वह बोल नहीं पा रहे थे।

तब तक शाही हक़ीम साहब आ पहुंचे थे।

उन्होंने मरीज़ की नब्ज़ देखी, पेट को कई हिस्सों से दबाया, आंखों की पुतलियों का भी निरीक्षण किया, माथे का स्पर्श किया और बोले,

बेगम साहिबा, वैसे तो यह मलेरिया है, लेकिन मौसम के मिजाज के साथ ही बिगड़ कर कुछ निमोनिया भी हो गया लगता है। मैंने एक काढ़ा तथा कुछ बूटियां बना रखी हैं, वह भिजवाता हूँ।

हकीम साहब ने चिंतातुर बेगम को आश्वस्त किया।

''हकीम साहब, चिंता क्यों न हो, मुआ चौथे दिन भी वैसा ही है बुखार इनका, देखो रंगत पर भी कैसा नामाकूल असर डाला है।''

कहकर बेगम समरू ने अपनी चिंता को जायज ठहराया। उनका इशारा समरू साहब के चेहरे पर छाई मुर्दानगी पर था। उनकी रंगत ऐसी हो चली थी जैसे वह महीनों से बीमार हों।

''आप ज्यादा फिकर न करें। माशाल्लाह कल रात तक खुशख़बरी मिलेगी। बुखार है कुछ अड़ियल वाला। अपनी मर्जी से आता है और अपनी ही मर्जी से जाता है। पर यकीन मानिए हुजूर दुरुस्त हो जाएंगे।''[8]

बेगम समरू ने अपने बीमार पति रेन्हार्ट को बचाने की हर संभव कोशिश की, किंतु रेन्हार्ट को न बचाया जा सका। रेन्हार्ट की मृत्यु के बाद जैसे बेगम की दुनिया ही उजड़ जाती है। इस तथा और सत्य का वर्णन राजगोपाल सिंह वर्मा ने बहुत ही प्रामाणिकता और संवेदनशीलता के साथ किया।

''सन् 1778 की गर्मियों की चार मई का मनहूस दिन था वह, दुर्भाग्य ने कहर बरसाया। देखते–देखते वाल्टर रेन्हार्ट सोंबे की सांसें ठहर गईं। एक हिचकी आई और उनकी अचानक मृत्यु हो गई।

कहते हैं कि ठंड लगने और उसके इलाज में हकीम के अनदेखी करने से मौत हुई सोंब्रे की। वह बीमारी की गंभीरता को समझने में नाकामयाब रहा था। फरजाना के लिए यह बहुत अप्रत्याशित सदमा था। बेगम की दुनिया उसकी आंखों के सामने ही उजड़ गई थी और वह कुछ भी न कर पाई, इससे अधिक निस्सहाय तो वह कभी भी न थी। जिस खुदा ने उसे दिल खोल कर दिया था, न जाने आज उसने फिर उसे दोराहे पर क्यों ला खड़ा किया, यह बात उसकी समझ से परे थी। वैसे भी अभी सोने की ऐसी उम्र न थी कि उसको मौत के आगोश में जाने की नौबत आती। अभी वह इस मुहब्बत और सुकू की ब्याहता जिंदगी को लंबे अरसे तक जीने की ख्वाहिश रखती थी, पर अब जो दुख उसे मिला था, इस दुख को वह खुद ही महसूस कर सकती थी।

जागीर में चालीस दिन के मातम का ऐलान कर दिया गया। इस संबंध में कोई सरकारी ऐलान नहीं किया गया था, पर बेगम के मुख्य सलाहकारों ने मशवरे के बाद यह फ़ैसला लिया था। बेगम अवसाद में थी और कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं रही थी। मातम के इन दिनों में न बेगम ने कोई शृंगार किया, न आभूषण पहने और न पलंग पर सोई। इस अवधि में बेगम समरू ने सामिष भोजन को भी त्याग दिया।''[9]

इस वर्णन के विपरीत अमृतलाल नागर ने 'सात घूंघट वाला मुखड़ा' में बेगम समरू के अविवश्वास, छल और अपने सेनापति टॉमस के साथ मिलकर टॉमस के द्वारा बेगम रेन्हार्ट की मृत्यु का चित्रण किया गया है।

अमृतलाल नागर ने रेन्हार्ट को अंतिम समय में बेगम समरू के द्वारा किले में कैद किये जाने का भी उल्लेख है। एक उद्धरण इस तथ्य की पुष्टि करता है–

''जीवन–भर दूसरों को धोखा देकर फलने–फूलने वाला जर्मनी का आवारा, नसीब का चमकता सितारा जनरल वाल्टर रेनहार्ड उर्फ नवाब समरू साहब खुद अपने जीवन का सबसे बड़ा धोखा खा गया। दूध अपने पीनेवाले साँप को ऐसी मस्ती देने लगा कि वह खुद–ब खुद लालच–ब–लालच दूध की नाँद में बेहोश होकर सरकता गया और उसी में फिसलकर डूब मरा। पिछली सारी लड़ाइयों में और राजनीतिक दाँव–पेचों में नवाब हमेशा 'खुदा' बनाकर पीछे रखे गए, बेगम आगे रही। उसकी नीतियों की सफलता के बाद नवाब ने विरोध तक करना छोड़ दिया था। अपने सारे अधिकार दूसरी पत्नी को सौंपकर निश्चिन्त मन से निष्क्रिय विलासरत हो गए थे। . . . स्थिति देखकर खुद समरू ही को लगा कि यही उसका अनिवार्य अंत था। तातारिनों के तने तमंचों से अपने–आपको घिरा हुआ देखते ही सोम्ब्रे हँस पड़ा, मेज़ से प्याला उठाते हुए चारों तरफ कमरे को अन्दर से घेरकर खड़ी हुई तातारिन की ओर मुखातिब होकर बोला, शाहजहाँ आज दूसरी बार इस किले में कैद हुआ है, और इस बार उसके किसी बेटे ने नहीं, बल्कि खुद मुमताजमहल ने ही उसे कैद किया है।''[10]

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास में बेगम समरू और उसके सेनापति टॉमस के द्वारा मीली–भगत से उसकी हत्या का वर्णन किया है। जबकि यह तथ्य भी इतिहास से मेल नहीं खाते।

राजगोपाल सिंह वर्मा ने अपने जीवनीपरक उपन्यास में इस तथ्य का खंडन किया है। उपन्यास के अंत में परिशिष्ट के अतंर्गत इन सभी तथ्यों का खंडन किया है–

> *''उपन्यास की लेखकीयता स्वतंत्रता के नाम पर आप महत्त्वपूर्ण समकालीन तथ्यों और तिथियों की अनदेखी नहीं कर सकते यदि नागर जी जैसा विद्वान लेखक ऐसा करे तो और भी चिंता की बात है उन्होंने अपने इस उपन्यास में जॉर्ज थॉमस कर बेगम के पति रेन्हार्ट सोंब्रे से उसकी शादी के दिनों से ही नोक–झोंक होने और बेगम का थॉमस से अदक्ष मेल–ओल होने का घाल–मेल किया है। पर, वस्तुस्थिति यह है कि जॉर्ज थॉमस ने भारत में पहला कदम 1781 में मद्रास बंदरगाह पर रखा था। फिर, छोटी–छोटी रियासतों की नौकरी कर कई बरसों बाद (लगभग 1787 में) वह बेगम समरू की नौकरी में पहुंचा था। लेकिन न जाने कैसे उन्होंने अपने उपन्यास में वह संदर्भ दिया है, जबकि बेगम के पति रेन्हार्ट सोंब्रे की मृत्यु अविवादित रूप से सन् 1778 में आगरा में हो गई थी। जॉर्ज थॉमस आयरलैंड से प्रथम बार सन् 1781 में भारत–आगमन पर कोई प्रश्नचिहन भी कभी नहीं उठा है। ऐतिहासिक चरित्र के चित्रण में अपने उपन्यास के माध्यम से अंगुली उठाना किसी भी रूप में उचित नहीं कहा जा सकता। इस उपन्यास में जॉर्ज थॉमस का चरित्र एक बार नहीं, न जाने कितनी बार समरू साहब से टकराया है। यह कल्पनाशीलता की अति है।''*[11]

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अमृतलाल नागर ने घटनाओं एवं तथ्यों में उपन्यास के शुरू में संकेत देकर जनश्रुतियों एवं किंवदंतियों के आलोक में बोलने की कुछ अधिक ही छूट ली है। यह कल्पना उपन्यास की प्रामाणिकता पर संदेह पैदा करती है और उसकी ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। जबकि राजगोपाल सिंह वर्मा ने अपने जीवनीपरक उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाक्रम और तथ्यों को अपने लिए श्लाघ्य और प्रामाणिक माना है। उन्होंने बेगम समरू पर लिखे हुए अपने पूर्व के तमाम शोध संदर्भ, तथ्यों, रेशालों, पट्टों, अंग्रेज और फ्रेंच अधिकारियों द्वारा तत्कालीन समय में लिखे गये साहित्य, उनके मध्य हुए पत्राचार को अपनी बात को पुष्ट करने के लिए इन संदर्भों को आधार बनाया है। इन तमाम संदर्भों का लेखक ने जीवनी के अंत में विवरण भी दिया है।

राजगोपाल वर्मा की गवेषणात्मक दृष्टि और दीर्घावधि में किए गए परिश्रम से इस उपन्यास में तमाम ऐतिहासिक घटनाक्रम और तथ्य स्पष्ट रूप से मुखरित हुए है। लवसूल से मृत्यु दिखाई जबकि ऐसा नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अमृतलाल नागर, सात घूंघट वाला मुखड़ा, पृ०सं० 18
2. वही, पृ०सं० 6
3. राजगोपाल सिंह वर्मा, बेगम समरू का सच, पृ०सं० 19–20
4. अमृतलाल नागर, सात घूंघट वाला मुखड़ा, पृ०सं० 9–10
5. राजगोपाल सिंह वर्मा, बेगम समरू का सच, पृ०सं० 30
6. अमृतलाल नागर, सात घूंघट वाला मुखड़ा, पृ०सं० 15
7. वही, पृ०सं० 30
8. राजगोपाल सिंह वर्मा, बेगम समरू का सच, पृ०सं० 89–90
9. वही, पृ०सं० 91
10. अमृतलाल नागर, सात घूंघट वाला मुखड़ा, पृ०सं० 58–59
11. राजगोपाल सिंह वर्मा, बेगम समरू का सच, पृ०सं० 261